।। ओ३म् ।।

आर्य मार्तण्ड

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक

वैदिक संस्कृति संरक्षण एवं सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध–आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजा पार्क, जयपुर

वर्ष - 94 अंक 11 पृष्ठ 16 मूल्य ₹ 5/- मार्च प्रथम 5 मार्च से 21 मार्च 2020

आर्य समाज के हनुमान तपोधन, निष्ठावान्

आचार्य नन्दकिशोर विद्यावाचस्पति के निधन पर

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की ओर से

हार्दिक श्रद्धान्जलि

प्रतिनिधि गतिविधि

स्वामी प्रतापपुरी जी तारातरामठ बाड़मेर के जयपुर आगमन पर स्वागत करते प्रतिनिधि

आर्य समाज कोटपुतली जयपुर के आर्य भवन में प्रतिनिधि एवं कार्यकर्ता

आर्य समाज बाड़मेर में ऋषि बोध दिवस पर यज्ञ

आर्य समाज सुनेल, जिला झालावाड़ का भवन

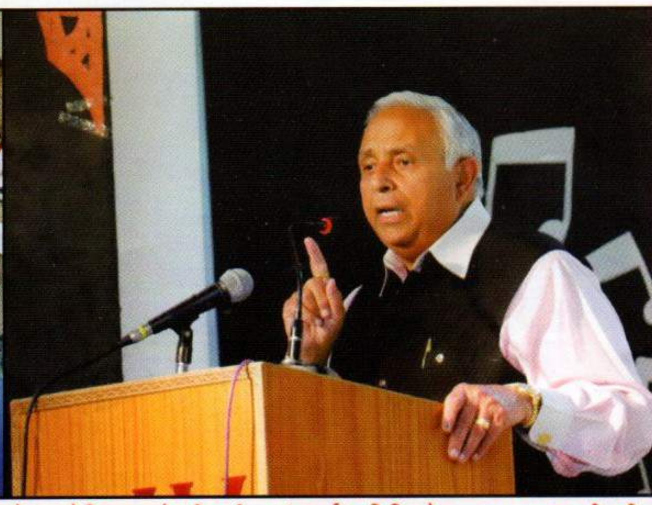

डी.ए.वी. स्कूल वैशाली नगर जयपुर में पूनम की पाठशााला कार्यक्रम को सम्बोधित करते डी.ए.वी. प्रबंधकर्तृ समिति के अध्यक्ष पूनम सूरी जी

ओ३म्

आर्यमार्तण्ड

आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

दशमी शुक्लपक्ष फाल्गुन विक्रम सम्वत् 2076, कलि सम्वत् 5120, दयानन्दाब्द 195, सृष्टि सम्वत् 01,96,08,53,120

संरक्षक

1. महाशय धर्मपाल जी (एम. डी. एच.)
2. श्री रमेश गुप्ता (आर्य), अमेरिका
3. श्री दीनदयाल जी गुप्त (डॉलर बनियान)

प्रेरणा स्रोत

1. श्री स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती
2. श्री विजय सिंह भाटी
3. श्री जगदीश प्रसाद आर्य
4. श्री मदनमोहन आर्य

संपादक

श्री देवेन्द्र कुमार

प्रंबन्ध सम्पादक

1. आचार्य रविशंकर आर्य
2. डॉ. सन्दीपन आर्य
3. श्री अशोक शर्मा
4. श्री ओमप्रकाश विद्यावाचस्पति

आर्य मार्तण्ड वार्षिक शुल्क – ₹ 100/-
मासिक प्रकाशन सहयोगी – ₹ 3100/-
छः मासिक प्रकाशन सहयोगी – ₹ 5100/-
वार्षिक प्रकाशन सहयोगी – ₹ 11000/-

प्रकाशक

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान हनुमान ढाबे के पास, राजापार्क, जयपुर –302004

0141-2621879, 9352547258

e-mail : aryamartand@gmail.com

e-mail : arya.sabha1896@gmail.com

आर. एन. आई नं.10471/60

अनुक्रम

• संगठन निर्माण	– सम्पादकीय	04
• सभा का उभरता स्वरुप	– सभा कार्यालय	05
• आवश्यक सूचना	– सभा कार्यालय	06
• ब्रह्मचारी नन्दकिशोर	– अंकुश आर्य	07
• अधिवेशन सूचना	– सभा कार्यालय	08
• वैदिक आध्यात्मिक न्यास	– आचार्य शक्तिनंदन	09
• नवगठित आर्य समाज	– अभिषेक बंसल	10
• प्रतिनिधि गतिविधि	– डॉ. सन्दीपन आर्य	11
• आर्य समाज एक नजर	– मार्तण्ड संवादाता	12
• अन्य समाचार		13

यूको बैंक

खाता धारक का नाम :- आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, जयपुर

खाता संख्या :- 18830100010430

IFSC Code :- UCBA0001883

प्रकाशक एवं मुद्रक श्री देवेन्द्र कुमार ने स्वामी आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजापार्क जयपुर की ओर से वी.के. प्रिन्टर्स सुदर्शनपुरा जयपुर से मुद्रित कराई और आर्य प्रतिनिधि सभा राजापार्क जयपुर से प्रकाशित, सम्पादक–श्री देवेन्द्र कुमार।

संगठन – निर्माण

सम्पादकीय.............. सभी शास्त्रों में ऋषियों ने वेदानुसार धर्म का वर्णन किया है। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के वेदोक्तधर्म विषय का प्रारम्भ संगठन सूक्त की व्याख्या से करते हैं एवं संगठन निर्माण को धर्म का श्रेष्ठ स्वरुप सिद्ध करते हैं। जहाँ कहीं भी एक से दो होंगे तो संगठन की आवश्यकता होगी चाहे दो राष्ट्र, राज्य, परिवार, मित्र, भाई–बहन, पिता–पुत्र, गुरु–शिष्य, पति–पत्नि आदि कोई भी क्यों न हो। संगठन मनुष्य के जीवन की आवश्यकता है, जीवन के सम्यक् संचालन हेतु एक–दूसरे से सहयोग की निर्भरता रहती है। जब न्यायपूर्वक समय, श्रम, धन, सेवा से लेन–देन होता रहता है तब तक प्रसन्नता बनी रहती है लेकिन ज्योंहि अन्याय प्रवेश करता है तो असन्तुलन की स्थिति उत्पन्न होती है। बहुतों अथवा कम से कम दो में स्वार्थ एवं अहंकार की पूर्ति न होने पर परस्पर द्वेष भावना उत्पन्न होती है। दोनों एक दूसरे का अहित चिन्तन करते हैं फलस्वरूप वाणी एवं व्यवहार में भी कटुता दिखाई देती है। इसी प्रकार चलते रहने पर सम्बन्ध विच्छेद की स्थिति घटित होती है। संगठन के स्थान पर विघटन हो जाता है। हम सब अनुभव करते हैं कि परस्पर द्वेष, तनाव दोनों पक्षों में दुःख उत्पन्न करता है और अधर्म का कारण बनता है। इसके विपरीत आत्मीयता, प्रेम, सहानुभूति दोनों में सुख उत्पन्न करती है और धर्म का कारण बनती है। संगठन बड़ा धर्म इसलिए है क्योंकि इसकी सिद्धि से लोकोपकार बहुत होता है।

दो मित्रो की मैत्री स्थिर रहे इसके लिए परस्पर विश्वास की आवश्यकता है, विश्वास सत्य व्यवहार के बिना सम्भव नही है। सत्य व्यवहार से उत्पन्न विश्वास होने पर आशंका को स्थान नहीं रहता। व्यक्ति, निर्भ्रान्त होकर निर्णय कर पाता है ऐसी मैत्री चिर स्थायी रहती है ठीक इसी प्रकार की स्थिति संगठन में पदाधिकारियों एवं कार्यकत्ताओं की होती है। सत्य व्यवहार होने पर संगठन के कार्यकर्ता एक–दूसरे पर विश्वासपूर्वक आगे बढ़ते हैं, अविश्वास की स्थिति में किसी भी एक मत पर स्थिर नहीं हो पाते एवं जनता से प्राप्त शक्ति, सामर्थ्य का दुरुपयोग कर बैठते हैं। संगठन के पदाधिकारियों को चाहिए कि वे अपने सहयोगी अधिकारी एवं कार्यकर्ताओं की बात को धैर्य से सुनें संगठन हित को प्राथमिकता देते हुए विचार करें। यदि संगठन हित में कोई बात करें तो बड़ा–छोटा न देखकर स्वीकार करें। संगठन हित में अपना हित देखते हुए सबको यथायोग्य सम्मान देते हुए विचार करें, इसके विपरीत विचार रखने वाले के प्रति द्वेष भावना न रखते हुए उसे स्वयं तथा अन्यों से भी समझाने का प्रयत्न करें जिससे यथा सम्भव एकमत हो जावे। संगठन में नये व्यक्ति से यदि कार्य में कोई त्रुटी होती है तो वहाँ आत्मवत् व्यवहार करते हुए क्षमा गुण को धारण करते हुए आगे अवसर अवश्य देना चाहिए।

विद्वान् लोगों को इसी प्रकार परस्पर विरोध छोड़कर प्रीति से संवाद करके सत्य को ग्रहण कर लेना चाहिए। क्योंकि विद्वानों की सबसे अधिक जिम्मेदारी है, विद्वान् समाज का मुख है। विद्वानों में विरोध होने पर सामान्यजन पर दुष्प्रभाव पड़ता है जिससे सामाजिक तन्त्र में बिखराव उत्पन्न होता है और समाज अनियन्त्रित होने लगता है। विद्वानों के एकमत होने पर सत्यसिद्धान्त शीघ्र ही समाज में प्रसारित होकर लाभ पहुँचता है इसलिए वेद कहता है–

सगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते।।

ऋ 10.191.2

आचार्य रवि शंकर आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा राजथान का उभरता स्वरुप एवं सहयोग–अपेक्षा

राजस्थान में स्थित आर्य समाजों की शिरोमणि संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान ऋषि कार्यों को आगे बढ़ाने हेतु कृत संकल्पित है पिछले कुछ समय से सभा द्वारा कई प्रकल्प गति से चलाए जा रहे हैं। आज सभा में वेद प्रचार हेतु वैदिक विद्वान् उपलब्ध हैं जो गाँव–गाँव, नगर–नगर जाकर ऋषियों का सन्देश सुनाते हैं अभी हाल ही में सभा ने एक वैदिक भजनोपदेशक की व्यवस्था की है। सभा की पत्रिका आर्य मार्तण्ड के स्वरुप में आमूल–चूल परिवर्तन करके उसे प्रतिष्ठित स्वरुप देने का प्रयास चल ही रहा है। सभा अधिकारियों एवं सक्रिय कार्यकताओं द्वारा राजस्थान के आर्य समाजों में जाकर सम्बन्धित समस्याओं को सुनकर निराकरण कर समाजों को गति प्रदान करने की सूचनाएँ विगत एक वर्ष से आर्य मार्तण्ड में आप पढ़ ही रहे हैं। सभा कार्यालय के नवीनीकरण के साथ आर्य समाज एवं आर्यवीर दल के कार्यकताओं, विद्वानों एवं अतिथियों के भोजन आवास की व्यवस्था को भी पूर्व की अपेक्षा अच्छा किया है जिसे आगन्तुक अतिथि स्वयं अनुभव करते हैं। निश्चित् रूप से ये सब कार्य आर्य समाजों एवं आर्य भामाशाह महानुभावों के सहयोग से ही हो पा रहे हैं। पुनरपि विविध कार्यों के गति से संचालित करने हेतु आपसे सहयोग की अपेक्षा है। अतः राजस्थान की सभी आर्य समाजों से निवेदन है कि सभी आर्यसमाजें अपनी आय का दशांश देने में उत्साह दिखाएँ एवं आर्य भामाशाह इस पुनीत कार्य हेतु आगे आएँ जिससे संगठन–निर्माण कार्य निर्बाध आगे बढ़ सके। सभा अधिकारियों ने विचार किया है कि यदि कोई सभा के प्रकल्पों तथा वेद प्रचार, पत्रिका प्रकाशन, आतिथ्य आहुति में आर्थिक सहयोग करेंगे, आर्य मार्तण्ड पत्रिका में उन आर्य महानुभावों का नाम प्रकाशित किया जायेगा।

सभा के सभी अधिकारी एवं कार्यकर्ता मनन करें कि ऋषि मिशन को और अधिक कैसे बढ़ाकर सफल किया जा सकता है।

आप सब के स्नेह एवं सहयोग का कांक्षी।

मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

आचार्य सोमदेव जी द्वारा जिज्ञासा–समाधान

मनुष्य में जिज्ञासा का होना बहुत स्वाभाविक है यदि उसे समय पर उचित समाधान मिलता रहे तो व्यक्ति नवीन–नवीन ज्ञान के साथ उन्नति के पथ पर उत्साहित होकर अग्रसर होता रहता है। इसके विपरीत जिज्ञासाओं का समाधान न करने पर अथवा योग्य व्यक्तियों के अभाव में उचित समाधान न होने पर जीवन में रुकावट बनी रहती है, व्यक्ति कुण्ठित हो जाता है इस प्रकार उसकी उन्नति का रथ रुक जाता है। आर्य जनों की भी शास्त्रीय, सैद्धान्तिक, आध्यात्मिक, व्यावहारिक शंकाओ का प्रमाण एवं तर्कपूर्वक समाधान होता रहे, इसके लिए सुप्रसिद्ध दर्शनाचार्य आचार्य सोमदेव जी आर्य (मलारना चौड़, सवाई माधोपुर) ने सहर्ष स्वीकृति प्रदान की है। इस हेतु आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान आचार्य जी का धन्यवाद ज्ञापित करती है। आचार्य जी द्वारा किए समाधानों को आर्य मार्तण्ड के अंको में प्रकाशित किया जायेगा। आप प्रबुद्ध पाठक अपनी शंकाओं को आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय अथवा ईमेल पर भेज सकते हैं।

मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

प्रकाशन सहयोगी– षाण्मासिक

1. कन्या गुरुकुल भुसावर, भरतपुर 2. यशमुनि पर्वतसर नागौर

आर्य प्रतिनिधि सभा प्रकाशन सहयोगियों का हार्दिक आभार व्यक्त करती है।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान आवश्यक सूचना (कार्यालय आदेश)

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान से सम्बद्ध समस्त आर्य समाजों को सूचित एवं निर्देशित किया जाता है कि वर्ष 2019–20 का निश्चित् कोटि, दशांश एवं आर्य मार्तण्ड शुल्क निर्धारित प्रपत्र (वार्षिक मानचित्र) भरकर आगामी 15 अप्रैल 2020 तक भेज देवें। जिन आर्य समाजों ने 2018–2019 का दशांश आदि अभी तक सभा कार्यालय को नहीं भिजवाया है। वे संस्थाएँ 2 वर्ष का दशांश, निश्चित् कोटि एवं आर्य मार्तण्ड शुल्क निर्धारित तिथि तक अनिवार्य रूप से सभा कार्यालय को भिजवाने का श्रम करें।

मंत्री
आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

51 कुण्डीय नव संवत्सरेष्टि विश्व शांति पर्यावरण संरक्षण महायज्ञ

चैत्र शुक्ल एकम् विक्रम संवत् 2077

बुधवार, दिनांक 25 मार्च 2020

स्थानः सामुदायिक केन्द्र, अरावली मार्ग, सेक्टर 8, मानसरोवर जयपुर
समय : सायं 4.00 बजे से 8.00 बजे तक

यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य रामपाल विद्याभास्कर
मुख्य वक्ता : आचार्य सोमदेव आर्य
गुरुकुल मलारना चौड़, सवाईमाधोपुर

21 फरवरी ऋषि बोधोत्सव (महाशिवरात्री)

आर्य समाज हिण्डौन सिटी द्वारा ऋषि बोधोत्सव पर प्रातःकाल प्रभात फेरी का आयोजन किया गया। आर्य समाज मोहन नगर तथा शहर की प्रभात फेरी प्रातः 6 बजे से प्रारम्भ होकर शहर के अलग–2 मुख्य मार्गों से होकर मुख्य आर्य समाज पहुँची जहाँ पर दोंनो का सामूहिक समापन हुआ तथा सभी सज्जनों ने वैदिक धर्म के प्रचार करने, पर्यावरण को शुद्ध रखने तथा देशहित में कार्य करने का संकल्प लिया। तत्पश्चात् दोपहर 3 बजे से मुख्य आर्य समाज में यज्ञ तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। जिसमें महिलाओं की कुर्सी दौड़, रुमाल झपट्टा तथ लड़कियों की चम्मच दौड़ एवं पुरुषों की कुर्सी दौड़ प्रतियोगिता रखी गई। प्रतियोगिता के बाद शाखा के आर्यवीरों द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती की जीवनी पर नाटक, अध्यापक–विद्यार्थी नाटक, यश आयुष तथा आशु जी द्वारा तेरी मिट्टी में मिल जावा गाने पर डांस, पंकज तथा विकास जी द्वारा कविता तथा महिलाओं द्वारा भजनों की मनमोहक प्रस्तुती दी गई। कार्यक्रम का समापन कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे शान्तिस्वरुप जी (खरेटा वाले) द्वारा सभी का धन्यवाद ज्ञापित कर किया गया।

अन्त में सभी आगन्तुक ने ऋषि लंगर में प्रसादी पाई। कार्यक्रम में समाज के सभी प्रतिष्ठित आर्य जन, अंकुश आर्य, वेद प्रकाश आर्य, रामबाबू इत्यादि सज्जन उपस्थित रहे।

गिरीश आर्य

आर्य समाज के प्रहरी आचार्य ब्रह्मचारी नंदकिशोर जी का स्वर्गवास

आर्य जगत् के लिए बड़े दुःख की घड़ी है कि आर्य समाज के प्रहरी हनुमान व नारद के नाम से विख्यात आचार्य ब्रह्मचारी नंदकिशोर जी जिन्होंने अनेक पुस्तकों का लेखन एवं आर्य समाज के इतिहास के लिए सामग्री एकत्रित करने में अहम भूमिका निभाई तथा अनेक संस्थाओं, ब्रह्मचारी, विद्वानों व जरुरत–मंदो का सहयोग प्रदान किया। देश व विदेश में वैदिक धर्म के प्रचार में जो सदा संलग्न रहे। उनकी रोगों से ग्रसित होने के कारण चिकित्सालय में चिकित्सा चल रही थी। अन्य आर्यों के सहयोग से आचार्य सत्यसिंधु आर्य प्राचार्य आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय होशंगाबाद द्वारा उनका पूरा ध्यान रखा गया। परंतु उसके बावजूद भी चिकित्सा के दौरान 17 फरवरी 2020 को सायंकाल उनका निधन हो गया।आचार्य श्री की अंत्येष्टि दिनांक 19 फरवरी 2020 को प्रातः 10:30 से आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय होशंगाबाद में संस्कार विधि के अनुसार स्वामी ऋतस्पति जी के निर्देशन में, आचार्य अखिलेश शर्मा गुरुकुल के स्नातक के पौरोहित्य में एवं स्नातक, आचार्य, ब्रह्मचारियों द्वारा वेद मंत्रों के उच्चारण के साथ की गई। आचार्य सत्यसिंधु आर्य ने मुखाग्नि प्रदान की। उनके अंतिम संस्कार में भारतवर्ष के अनेक स्थान से आर्य गण पधारे। सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री प्रकाश आर्य जी, स्वामी संपूर्णानंद जी, डॉक्टर वेदपाल आर्य जी, आचार्य राजेंद्र जी आदि उपस्थित हुए। सभी ने आचार्य ब्रह्मचारी जी के गुणों, कार्यों एवं व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला।

22 फरवरी 2020 को प्रातः 9:30 से उनकी अस्थिचयन के उपरांत पुनः 10:30 से आचार्य धीरेंद्र जी जबलपुर के पौरोहित्य में एवं आचार्य सत्यसिंधु आर्य के यजमानत्व में शांतियज्ञ आयोजित किया गया। यज्ञ के उपरांत आचार्य योगेंद्र 'याज्ञिक' के संयोजकत्व में श्रद्धांजलि सभा का प्रारंभ हुआ। श्रद्धांजलि सभा में वानप्रस्थ साधक आश्रम, रोजड से स्वामी आशुतोष परिव्राजक जी, श्री जयनारायण आर्य जी छतरपुर महाराजपुर, श्री राजेंद्र शर्मा इटारसी, श्री बालचंद गामी इंदौर, श्री गिरीश चंद्र उपाध्याय होशंगाबाद, माता सरोज आर्या हरिद्वार, स्वामी ऋतस्पति जी गुरुकुल होशंगाबाद ने समस्त आर्य समाज की ओर से अपनी श्रद्धांजलि समर्पित की। तदोपरांत आचार्य ब्रह्मचारी नंदकिशोर जी की इच्छा के अनुरूप आचार्य सत्यसिंधु जी को उपस्थित आर्य गणमान्यो ने आचार्य ब्रह्मचारी नंदकिशोर जी का उत्तराधिकारी नियुक्त किया। अंत में आचार्य सत्य सिंधु जी ने उपस्थित गणमान्यों का आभार व्यक्त किया और प्रभु से प्रार्थना की कि प्रभु गत आत्मा को सद्‌गति प्रदान करें और उनके जाने से जो आर्य जगत को कष्ट हुआ है उसे सहने की शक्ति प्रदान करें।

जीवन परिचय– आचार्य ब्र. श्री नन्दकिशोर 'विद्यावाचस्पति' का जन्म 25 मई 1955 में हुआ। आपने दयानन्द ब्रह्ममहाविद्यालय, हिसार में आचार्य श्री ज्ञानचन्द्र जी एवं आचार्य श्री सत्यप्रिय जी के चरणों में बैठकर वेद–विद्या का अध्ययन किया और विद्यावाचस्पति की उपाधि प्राप्त की। आप आर्य समाज के सुप्रतिष्ठित गुरुकुल ज्वालापुर आ गए यहाँ आप विद्याभास्कर की उपाधि से विभूषित हुए पुनः आपने स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की तपोस्थली गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में एम. ए. की उपाधि प्राप्त की। अध्ययन के पश्चात् नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा धारण कर आपने आर्य समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी पूर्ण शक्ति के साथ कार्य आरम्भ कर दिया। आप शोधार्थी मनोवृत्ति के स्वामी थे। आपने दुर्लभ साहित्य खोजकर संगृहीत किया। जिसको समय–समय पर जिज्ञासु लेखकों, प्रकाशकों को आप उपलब्ध करवाते रहते थे। गौरव ग्रन्थमाला इसी शोध का परिणाम है। एक–एक विषय पर आपने साम्रगी एकत्रित कर पाठकों के हितार्थ प्रकाशित की है। आर्य समाज के सप्तखण्डीय इतिहास के लिए डॉ. सत्यकेतु जी विद्यालंकार को आपने बहुत सी साम्रगी उपलब्ध करवाई थी।

ऋषि दयानन्द द्वारा प्रचारित एवं प्रसारित वेदोक्त विचारधारा को जन जन तक पहुंचाने हेतु आपका अहर्निश चिन्तन चलता रहता था। आपने कई गुरुकुलों की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान किया पहुँचाने हेतु अनेक जनों को प्रेरित करते रहते थे।

साहित्य प्रकाशन में भी आप सक्रिय थे और आपका प्रयास था कि आर्य समाज का साहित्य विधिवत् खण्डो में प्रकाशित हो, जिससे इसका स्वरुप व महत्व तथा उपयोगिता सर्वत्र प्रकाशित हो सके।

आप आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्भ के वर्षों से अन्तरंग सदस्य रहे तथा सार्वदेशिक आर्यवीर दल के राष्ट्रीय प्रचार मंत्री पद को सुशोभित करते हुए भारतवर्ष व मध्य प्रदेश के सैकड़ों गाँवों में आर्यवीर दल की अनेक शाखाओं का संचालन करते रहे।

नेपाल में आर्य समाज के कार्य हेतु आपका प्रयास अनुकरणीय व श्लाघनीय रहा। हिन्दी के साथ नेपाली व मराठी भाषा के साहित्य प्रकाशन में भी आपका उल्लेखनीय योगदान था। अनीता आर्ष साहित्य प्रकाशन पानीपत, श्रद्धा साहित्य प्रकाशन ज्वालापुर, हरिद्वार द्वारा लाखों रुपये की पुस्तकें प्रकाशित करवाकर वितरित करवाई। बालकों, युवको को आगे बढ़ाने व प्रोत्साहन देने में आप हमेशा तत्पर रहते थे। सम्पूर्ण आर्य जगत् में अपनी अद्‌भत् क्षमताओं, लगन व कार्यशैली के कारण आप सम्मान पाते थे। आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता, वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार एवं वैदिक साहित्य सेवा के कारण आप कई राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित हुए। ऐसे तपस्वी, निष्ठावान् महान् आचार्य का स्मरण कर हम अपने जीवन में और अच्छा करने के लिए प्रेरित हो रहे हैं।

अंकुश आर्य

साधारण सभा के अधिवेशन की सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के सभी साधारण सदस्यों को सूचित किया जाता है कि विगत साधारण सभा दिनांक 24 नवम्बर 2019 के निर्णयानुसार तथा सभाप्रधान जी से प्राप्त सहमति के अनुसार साधारण सभा का अधिवेशन दिनांक 29 मार्च 2020 रविवार 11:00 से 2:30 बजे तक सभा कार्यालय राजापार्क जयपुर में रखा गया है। उक्त अधिवेशन में आपकी उपस्थिति महत्त्वपूर्ण एवं सादर प्रार्थनीय है।

कृपया आवश्यक रूप से समय पर पधारकर संगठन के कार्य को मजबूत करने में अपना योगदान देवें।

अधिवेशन के विचारणीय बिन्दु :–

- विगत कार्यवाही की सम्पुष्टि।
- आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के कार्यवृत्त की प्रस्तुति एवं प्रगति।
- सभा के प्रस्तावित नवीन विधान के प्रस्ताव पर निर्णय।
- सभा के 125 वें स्थापना दिवस के अवसर पर प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन की तिथियों पर निर्णय।
- सभा से सम्बन्धित विभिन्न कार्य यथा– वेदप्रचार, न्यायिक क्षेत्र, नवीन पंजीयन, अधिवक्ता, दशांश एवं निश्चित् कोटि आदि पर विचार।
- अन्य विषय प्रधान जी की अनुमति से।

मंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

आवश्यक सूचना एवं निर्देश

राजस्थान प्रान्त में स्थित समस्त आर्य समाजों के पदाधिकारियों को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान द्वारा प्रसार–प्रसार हेतु भजनोपदेशक की व्यवस्था की है। **ब्र० ध्रुव शास्त्री** जो गुरुकुल झज्जर से स्नातक है, युवा एवं योग्य गायक हैं। इस सम्बन्ध में आर्य समाज के समस्त पदाधिकारियों को निर्देशित किया जाता है कि आर्य समाज के वार्षिकोत्सव, यज्ञ अथवा अन्य कार्यक्रम हेतु आमन्त्रित करने के लिए राजापार्क जयपुर स्थित सभा कार्यालय से सम्पर्क कर अपना कार्यक्रम निश्चित् करें। प्रत्येक आर्य समाज अपने वार्षिकोत्सव एवं प्रचार–प्रसार गतिविधियों हेतु सभा से अग्रिम स्वीकृति प्राप्त कर लेवें।

पूज्य स्वामी सत्यपति जी महाराज की हार्दिक अभिलाषा थी कि जैसे प्राचीन समय में ऋषि–मुनियों की सभाएँ होती थीं, शास्त्रीय चर्चाएँ–सामूहिक चिन्तन होता था, वैसे ही वर्तमान समय में वैदिक दार्शनिक विद्वान् भी अपना संगठन बनाएं, वेद–दर्शन आदि शास्त्रों की संशयास्पद एवं प्रतीयमान मतभेद प्रसंगों पर गोष्ठियों में, स्नेहमय वातावरण में प्रामाणिक एवं विश्लेषणात्मक परिचर्चा के माध्यम से विचार करके निर्णय तक पहुँचे। फलस्वरूप स्वामी जी के कुछ यशस्वी आचार्यों ने वर्ष 2011 में "वैदिक आध्यात्मिक न्यास" नामक एक संगठन को मूर्त रूप दिया। इस संगठन में पूज्य स्वामी सत्यपति जी की शिष्य परंपरा में कम से कम दो दर्शन अथवा प्रथमावृत्ति अथवा 2 वर्ष सानिध्य में रहने वाले महानुभाव सदस्य बन सकते हैं।

वर्ष 2012 से अब तक न्यास का स्नेह सम्मेलन प्रतिवर्ष आयोजित हो रहा है। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी माघ शुक्ल द्वादशी तदनुसार 6 फरवरी 2020 से माघ शुक्ल पूर्णिमा तदनुसार 9 फरवरी तक अष्टम स्नेह सम्मेलन का वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़ में आयोजन किया गया। हर दिन प्रायः तीन–तीन सत्रों में परिचर्चा का आयोजन किया गया। प्रत्येक सत्र के लिए लगभग 2 घंटे का समय निर्धारित किया गया। परिचर्चा के विषय एवं वक्ता पूर्व निर्धारित थे। प्रत्येक सत्र के अन्त में श्रोत्राओं को भी अपने विचार व्यक्त करने के लिए समय दिया गया था।

6 फरवरी को रात्रि 8 बजे उद्घाटन सत्र के द्वारा सम्मेलन का विधिवत् प्रारंभ हुआ। यह सम्मेलन का स्वागत एवं परिचय सत्र था, सत्र की अध्यक्षता न्यास के अध्यक्ष सम्माननीय आचार्य आनंद प्रकाश जी और संचालन आचार्य सर्वमित्र जी ने किया। सत्र के प्रारंभ में आर्यजगत् के मूर्धन्य वैदिक विद्वान् श्रद्धेय आचार्य सत्यानन्द जी वेदवागीश, आर्य संन्यासी गुरुकुल हापुड़ के आचार्य स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, न्यास की पोषक सदस्य व आश्रम की अनन्य सहयोगिनी माता कौशल्या जी बीकानेर, इन तीन महानुभाव के निधन पर शोक संवेदना प्रकट की गई एवं कुछ समय के लिए मौन धारण कर श्रद्धांजलि व्यक्त की गई। इसके बाद न्यास के उपसचिव आचार्य संदीप जी ने सम्मेलन की रूपरेखा रखी। पुनः नए सदस्यों का परिचय हुआ।

7 फरवरी को प्रातः 9:30 बजे के द्वितीय सत्र में "आकाश के स्वरूप की विस्तृत विवेचना एवं स्पष्टता भावरूप या अभावरूप नित्य है या अनित्य है? अन्य शब्द आदि गुण कौन–कौन से हैं? "इस विषय पर चर्चा की जानी थी। इस सत्र की अध्यक्षता आचार्य संदीप जी एवं संचालन आचार्य शक्तिनंदन जी ने किया। वक्ता के रूप में स्वामी मुक्तानंद जी एवं आचार्य आनन्द प्रकाश जी ने अनेक शास्त्रीय उदाहरणों के माध्यम से अपने–अपने पक्ष को रखा। सम्मेलन का तीसरा सत्र आचार्य भद्रकाम जी वर्णी की अध्यक्षता में तथा आचार्य रामदयाल जी के संचालकत्व में संपन्न हुआ। इस सत्र में "आध्यात्मिक प्रगति के इच्छुक व्यक्ति को परोपकार करना चाहिए या नहीं करना चाहिए? क्यों? यदि परोपकार करना चाहिए तो उसका स्वरुप क्या होना चाहिए व उसे कितना करना चाहिए?" इस विषय पर विचार किया गया। वक्ताओं में स्वामी मुक्तानन्द जी, आचार्य सत्यजित् जी, पं. रामचन्द्र जी ने अपने विचार प्रस्तुत किए। चतुर्थ सत्र में वैदिक आध्यात्मिक न्यास में सदस्यों की सहभागिता बढ़ाने पर विचार किया गया। इस सत्र की अध्यक्षता आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी एवं संचालन आचार्य वेदप्रकाश जी ने किया। वक्ता के रूप में आचार्य सत्येंद्र जी, श्री सत्यव्रत जी और अन्य वक्ताओं ने अपने सुझाव दिए।

8 फरवरी, शनिवार को प्रातः 9:30 बजे पंचम सत्र में "न्याय दर्शन में जीवात्मा को विभु बताने वाले सूत्रों तथा वात्स्यायन–भाष्य के वाक्यों की विवेचना और उनके वास्तविक अर्थ क्या हैं?" यह विषय निर्धारित किया गया था। इस सत्र की अध्यक्षा आचार्या सुखदा जी एवं संचालिका ब्रह्मचारिणी दीक्षा जी थीं, आचार्य भद्रकाम जी, आचार्य सत्यजित् जी, आचार्या शीतल जी ने शास्त्रीय प्रमाणों के साथ अपना अपना पक्ष रखा।

सम्मेलन के छठे सत्र में "वैदिक एवं आधुनिक भारतीय राजनैतिक प्रशासनिक व्यवस्था में साम्य और असाम्य" विषय पर चर्चा की गई। इस सत्र की अध्यक्षता आचार्या शीतल जी एवं संचालन आचार्य ज्ञानेन्द्र जी ने किया। वक्ताओं में प्रोफेसर शत्रुंजय जी

एवं आचार्य रवींद्र जी थे। रात्रिकालीन सप्तम सत्र में सदस्यों द्वारा भेजी गई शंकाओं का समाधान किया गया था। इस सत्र की अध्यक्षता स्वामी धर्मदेव जी तथा संचालन आचार्य रमण जी ने किया। 9 फरवरी प्रातः 9:30 बजे सम्मेलन के आठवें सत्र में जिसमें 'कैंसर रोग के कारण, स्वरूप, बचाव तथा निवारण' विषय पर चर्चा की गई। इस सत्र की अध्यक्षता आचार्य रवींद्र जी एवं संचालन ब्रह्मचारी सत्यव्रत जी ने किया। मुख्य वक्ता के रूप में जयपुर राजस्थान से पधारे कैंसर–रोग विशेषज्ञ डॉ प्रशांत जी शर्मा ने कैंसर के कारणों, स्वरूप एवं बचाव के उपायों पर विस्तार से प्रकाश डाला।

इस सम्मेलन के समापन सत्र की अध्यक्षता आचार्य आनन्द प्रकाश जी तथा संचालन आचार्य कर्मवीर जी ने किया। न्यास के प्रतिष्ठित सदस्य आचार्य कर्मवीर जी (रोजड़), आचार्य सर्वमित्र जी (मलारनाचौड़) एवं आचार्य रविशंकर जी (बयाना) ने पिछले वर्षों के अपने कार्यों और अगले वर्ष की भावी योजनाओं को न्यास के सदस्यों के सम्मुख रखा। अंत में न्यास के सचिव आचार्य सत्यजित् जी ने सभी का धन्यवाद व्यक्त किया। इस प्रकार वैदिक आध्यात्मिक न्यास के इस आठवें स्नेह सम्मेलन में देशभर से पधारे हुए, विभिन्न कार्य क्षेत्रों में संलग्न सदस्यों ने एक–दिनचर्या, सामूहिक उपासना, सामूहिक भोजन के माध्यम से परस्पर सौहार्द की वृद्धि करते हुए शास्त्रीय विषयों पर चर्चा की।

आचार्य शक्तिनन्दन "वैदिक", दिल्ली

आर्य समाज दयाल नगर, मिर्जापुर परिक्षेत्र, गंगापुर सिटी में नये आर्य समाज की स्थापना

आर्य समाज दयाल नगर, मिर्जापुर, गंगापुर सिटी में हाल ही में कार्यकारिणी का गठन किया गया जिसमें पुरुष कार्यकारिणी के अन्तर्गत प्रधान– श्री सद्भाव जी आर्य, मंत्री–गिरीश जी आर्य, कोषाध्यक्ष–देवेन्द्र जी आर्य, उपप्रधान–धमेन्द्र जी मित्तल, शम्भुदयाल आर्य, मीडिया प्रभारी मुकेश जी (एम बी एम विद्यालय वाले), अधिष्ठाता प्रदीप जी शर्मा एवं शुभम जी कुंजबिहारी जी एवं आशुतोष जी को सदस्य निर्विरोध निर्वाचित किया गया। महिला मण्डल कार्यकारिणी में प्रधान–सुनीता जी आर्या, महिला मंत्री– माया देवी एवं कोषाध्यक्ष–वंदना देवी गुप्ता को बनाया गया। आर्य समाज दयाल नगर में 14 अप्रैल 2019 को साप्ताहिक सत्संग की शुरुआत की गई। जिसके अंतर्गत प्रत्येक रविवार को गंगापुर सिटी के स्थानीय विद्यालय मित्तल आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय में साप्ताहिक सत्संग का आयोजन सतत हो रहा है। आर्य समाज दयाल नगर के साप्ताहिक सत्संग में श्री योगेन्द्र आर्य एवं उनकी धर्मपत्नि श्रीमती सुनीता आर्या नियमित रूप से इसकी व्यवस्थाओं को बनाने में प्रारम्भ से ही सहयोग दे रहे हैं। साप्ताहिक सत्संग में पुरुष, महिलाओं के साथ आर्यवीर दल शाखा मिर्जापुर एवं दयाल नगर परिक्षेत्र के आर्यवीर भी उपस्थित रहते हैं। महिलाओं द्वारा समय समय पर महिला सत्संग अलग से भी आयोजित किया जाता है। हाल ही में होली पर आर्य समाज दयाल नगर में महिलाओं द्वारा महिला सत्संग आयोजित किया गया।

अभिषेक बंसल

कार्यालय सूचना

सभी आर्य सज्जनों से निवेदन है कि 1999 के पश्चात् नवस्थापित आर्य समाज जिन्होने आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान से संबद्धता प्राप्त नहीं की है। वे आर्य समाज आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजपार्क जयपुर (हनुमान ढाबे के पास) जयपुर से संपर्क कर निर्धारित फार्म मंगवाकर पूर्णतः भरकर सभा कार्यालय को भिजवायें। जिससे वे आर्य समाज सम्पूर्ण औपचारिकता एवं अर्हताएँ पूर्ण करने पर आर्य प्रतिनिधि सभा से संबद्ध हो सके तथा उन्हे संबद्धता का प्रमाण पत्र जारी किया जा सके।

सभा मंत्री

प्रतिनिधि गतिविधि (कुशलगढ़, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़)

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के अधिकारी आर्य समाज के कार्यों को गति देने हेतु निरन्तर कार्यशील एवं सक्रिय हैं। वे विभिन्न क्षेत्रों में जाकर स्थानीय पदाधिकारियों एवं कार्यकताओं से मिलकर उनका उत्साहवर्धन करते हैं, उनकी समस्याओं का निपटारा करते हैं। इसी क्रम में विगत माह में प्रतिनिधि दल सभा मंत्री श्री देवेन्द्र शास्त्री के नेतृत्व में कुशलगढ़, बांसवाड़ा तथा प्रतापगढ़ गया। इस दल में श्री नरदेव आर्य–उप्रधान, डॉ. सन्दीपन आर्य–कोषाध्यक्ष, श्री सुखलाल आर्य–अन्तरंग सदस्य तथा भँवरलाल चौधरी आदि रहे।

इस क्षेत्र में स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज द्वारा शिक्षा एवं संस्कार के अनेक कार्य किए गए। उनके द्वारा कुशलगढ़ एवं बांसवाड़ा में दयानन्द सेवाश्रम संचालित किए गए, जिसके माध्यम से अनेक छात्र विभिन्न क्षेत्रों में वैदिक धर्म का प्रचार कार्य कर रहे हैं। यह सीमावर्ती क्षेत्र होने के कारण यहाँ ईसाई मिशनरियों की कुदृष्टि इस क्षेत्र पर पड़ी हुई है। वे आर्थिक प्रलोभनों के माध्यम से बड़ी संख्या में ईसाईकरण में लगे हुए हैं। युवाओं को वैदिक धर्म से जोड़ने के लिए इस क्षेत्र में आर्यवीर दल ईकाई का गठन किया गया है। बांसवाड़ा क्षेत्र में वर्तमान में तीन आर्य समाज कुशलगढ़, बांसवाड़ा तथा गांगड़तलाई सफलतापूर्वक कार्य कर रहें हैं।

प्रतापगढ़ में आर्य समाज के दो भाग हैं मुख्य भवन जो गोपालगंज में स्थित है तथा दूसरा भाग बांसवाड़ा रोड पर स्थित भूखण्ड है जिस पर कुछ असमाजिक तत्वों की कुदृष्टि है जो आर्य समाज से जुड़कर उक्त भूखण्ड पर गिद्ध दृष्टि डाले हुए हैं। सभा अधिकारियों ने इसका निरीक्षण किया तथा आवश्यक कार्य योजना तैयार की। प्रतापगढ़ में ही श्रीमती वसुन्धरा राजे सरकार में जनजाति विकास मंत्री रहें नन्दलाल मीणा जी से उनके आवास पर प्रतिनिधि मण्डल ने मिलकर उनकी कुशलक्षेम जानी। उनसे प्रतापगढ़ क्षेत्र में आर्य समाज के विषय में विस्तृत चर्चा हुई, उन्होंने स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज द्वारा स्थापित दयानन्द आर्य विद्यालय बमोतर में प्रारम्भिक शिक्षा एवं संस्कार कक्षा 1–5 तक प्राप्त किए। स्वामी जी ने कुछ समय पश्चात् इस विद्यालय को राजस्थान सरकार को समर्पित कर दिया। वर्तमान में यह विद्यालय राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय बमोतर के नाम से स्वामी जी की स्मृति में संचालित है। स्वामी जी द्वारा दिए वैदिक संस्कारों का गहरा प्रभाव नन्दलाल जी के जीवन पर स्पष्ट परिलक्षित होता है। जिसके कारण वे राजनीतिक जीवन में बेबाक टिप्पणी के लिए जाने जाते हैं। सत्य पर राय रखने के बाद कभी कदम पीछे नहीं हटाते, भले उन्हें इसका राजनैतिक नुकसान उठाना पड़े। इस सम्बन्ध में उन्होंने स्वामी जी से जुड़े अनेक प्रसंग एवं संस्मरण प्रतिनिधि मण्डल को सुनाएं। बचपन में एक गलती पर स्वामी जी की ताड़ना का निशान भी दिखाया जो आज भी आपके कन्धे पर विद्यमान है। जिसके बाद आपने जीवन में कभी पुनः गलती नहीं की और एक सफल व्यक्ति बने। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के कार्यों एवं प्रभाव पर हम आर्य मार्तण्ड के आगामी अंको में लेख प्रकाशित करेंगे। जिनमें पाठक उक्त विभिन्न प्रसंग एवं संस्मरण पढ़ सकेंगे, साथ ही स्वामी जी द्वारा किए गए विशेष कार्यों को जान सकेंगे। प्रतिनिधि सभा पदाधिकारियों के बांगड़ क्षेत्र के इस विशेष भ्रमण एवं संगठनात्मक प्रचार अभियान में सभा के अन्तरंग सदस्य श्री जीववर्धन शास्त्री, संचालक– दयानन्द सेवाश्रम बांसवाड़ा एवं दिलीप शास्त्री, संचालक– दयानन्द सेवाश्रम कुशलगढ़ का विशेष योगदान एवं सहयोग रहा।

डॉ. सन्दीपन आर्य, जयपुर

कोटा– आर्य समाज कोटा द्वारा शिवरात्रि के अवसर पर बोधोत्सव पर्व मनाया गया। इस अवसर पर वैदिक विद्वान् आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती वेदोद्धारक एवं युग प्रवर्तक महान् व्यक्तित्व थे। वे आत्मज्ञान प्राप्त करते हुए आधुनिक काल में वैदिक ज्ञान के पुरोधा बने। कार्यक्रम में आर्य विदुषी डॉ. ज्योति आर्या ने वैदिक संस्कृति के प्रमुख तत्व यज्ञ पर प्रकाश डाला। उन्होनें कहा कि यज्ञ में प्रार्थना के माध्यम से ध्यान शक्ति बढ़ती है।

बोधोत्सव के इस कार्यक्रम में महर्षि दयानंद सरस्वती के जीवन पर आधारित प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया। प्रश्नोत्तरी विजेताओं को पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आर्य समाज में उल्लेखनीय कार्य करने वाले आर्य समाज कुन्हाड़ी के प्रधान पी.सी. मित्तल, आर्य समाज महावीर नगर के रामचरण आर्य, आर्य समाज तलवण्डी के लालचंद आर्य को सम्मानित किया गया।

अलवर– स्वतन्त्रता सेनानी स्व. श्री छोटू सिंह आर्य संस्थापक प्रधान, आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर की तेरहवीं पुण्यतिथि एवं श्रीमती शारदा देवी की सप्तम् पुण्यतिथि के अवसर पर दिनांक 23.02.2020, रविवार को आर्य समाज, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर में प्रातः 8.00 बजे यज्ञ से श्रद्धांजलि सभा प्रारम्भ हुई। जिसकी अध्यक्षता श्री अमर मुनि जी ने की। इस के उपरान्त शारदा देवी छोटूसिंह आर्य चैरिटेबल ट्रस्ट, अलवर द्वारा "ग्यारहवें सम्मान समारोह" में जस्टिस सज्जन सिंह कोठारी, पूर्व न्यायाधिपति व लोकायुक्त राजस्थान को "कर्मवीर आर्य श्रेष्ठ" की उपाधि से सम्मानित किया गया। एवं श्रीमती कमला शर्मा ने अभिनन्दन पत्र वाचन किया और स्मृति चिन्ह एवं शॉल ओढाकर सम्मानित किया। इस के उपरान्त आर्य कन्या विद्यालय समिति द्वारा संचालित संस्थाओं में से इस वर्ष चयनित सर्वश्रेष्ठ अध्यापिका श्रीमती नीता भार्गव को सम्मानित किया गया और जरूरतमन्द प्रतिभाशाली छात्राओं को पं. विद्यावाचस्पति मैमोरियल ट्रस्ट, दिल्ली द्वारा पुरस्कृत किया गया।

उदयपुर– महर्षि दयानन्द सरस्वती के 196वें जन्मदिवस के अवसर पर आर्य समाज हिरणमगरी के तत्त्वावधान में एक विशाल रैली का आयोजन किया गया, इस रैली में दयानन्द कन्या विद्यालय, समेत अनेक विद्यालयों के 500 बालक–बालिकाओं के अतिरिक्त आर्य समाज हिरणमगरी, आर्य समाज पिछोली, आर्य समाज सज्जन नगर, महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास आदि के लगभग 100 महिलाओं व पुरुषों ने भाग लिया।

जोधपुर– व्यायामशिक्षक विद्यासागर जी आर्य द्वारा आर्यसमाज पाणिनिनगर जोधपुर में जनवरी माह में नियमित शाखा लगाई गई। जिसमें आर्यवीर व आर्य वीरांगनाओं ने बौद्धिक व शारीरिक प्रशिक्षण प्राप्त किया। आर्य वीर दल के स्थापना दिवस पर भव्य व्यायाम प्रदर्शन एवं अभिभावकों की रोचक प्रतियोगिताओं के पश्चात् संगठन के महत्व पर प्रकाश डाला। जिला संचालक महेश आर्य, आर्य समाज के प्रधान कैलाशचन्द्र आर्य के नेतृत्व में अनेक आर्यजन सम्मिलित हुए।

जयुपर – वैशाली नगर स्थित डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल में महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती एवं ऋषिबोधोत्सव के पावन अवसर पर 20 फरवरी 2020 को वैदिक शिक्षाओं पर आधारित पूनम की पाठशाला नामक कार्यशाला का आयोजन किया गया। विद्यालय के प्रचार्य श्री अशोक कुमार शर्मा के संयोजन में आयोजित इस कार्यशाला के मुख्य वक्ता पदमश्री डॉ. पूनम सूरी जी, प्रधान– डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली थे। इस

अवसर पर मुख्य वक्ता आर्य शिरोमणि डॉ. पूनम सूरी जी ने उल्लेख किया कि वैयक्तिक जीवन के साथ सुखी समाज व उन्नत राष्ट्र के निर्माण में नैतिकता का महत्वपूर्ण स्थान होता है। नैतिक मूल्यों के बिना सुख की कल्पना भी निराधार है। इस अवसर पर आचार्य दीपक शास्त्री, श्रीमती श्रुति शास्त्री एवं विद्यालय के संगीत शिक्षक श्री राधावल्लभ जी ने भजनों की प्रस्तुतियाँ दीं।

भीनमाल– फाल्गुन कृ. त्रयोदशी को वेद विज्ञान मन्दिर, वैदिक एवं आधुनिक भौतिक विज्ञानशोध संस्थान भागल भीम, भीनमाल में महाशिवरात्रि एवं ऋषि बोध दिवस के अवसर पर 'बौद्धिक स्वतन्त्रता की ओर' विषय पर सम्मेलन का आयोजन हुआ। सम्मेलन में अध्यक्ष एवं मुख्य वक्ता आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक जी ने कहा कि हम वैदिक विज्ञान को आधुनिक विज्ञान का अन्धानुगामी वा दास नहीं बना सकते, बल्कि हमने सैद्धान्तिक भौतिकी के क्षेत्र में ऐसे रहस्यों को खोजा है, जिनकी वर्तमान विकसित भौतिकी कल्पना भी नहीं कर पा रही है। उन्होंने भारतीय इतिहास व प्राचीन विज्ञान को कल्पना मानने वालों की जमकर खिंचाई की और प्रबल तर्कों के द्वारा वैदिक गौरव को प्रस्तुत किया। इस अवसर पर सेवा निवृत्त प्रोफेसर वैज्ञानिक एवं कई प्रान्तों से पधारे लगभग 300 व्यक्ति उपस्थित थे। इस अवसर पर बी. टेक परीक्षा उत्तीर्ण किये दो युवकों ने आचार्य जी से वैदिक भौतिकी पढ़ने के लिए प्रवेश लिया।

शोक समाचार

आर्य समाज बहरोड़ अलवर के संस्थापक सदस्य, बहरोड़ क्षेत्र के आर्य प्रचारक महाशय विष्णु दत्त आर्य का निधन 82 वर्ष की आयु में दिनांक 28 फरवरी 2020 को हो गया, उनका अन्तिम संस्कार ग्राम माँचल स्थित उनके आवास पर वैदिक रीति से किया गया। प्रधानाचार्य पद से सेवानिवृत्त होने के पश्चात् अपना सम्पूर्ण समय आर्य समाज के कार्यों में लगा दिया था। आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्ता परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा शोक–संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति एवं सामर्थ्य प्राप्त हो। हम सब उनके पदचिन्हों पर चलते हुए उनके शेष कार्यों को आगे बढ़ाते रहें।

श्रीमान् सरस्वती प्रसाद गोयल एवं श्रीमती कंचनलता का भावपूर्ण स्मरण

सरस्वती प्रसाद जी जयपुर स्थित आवास मुक्तानन्द नगर में अपने छोटे पुत्र इन्द्रदेव के साथ सपत्नी रह रहे थे, आपका स्वाभाविक निधन 14 जनवरी को प्रातः 8 बजे दिनचर्या पूरी करते–करते हो गया। आप अपनी आयु के अन्तिम दशक 92 वर्ष की आयु में आर्य समाज के कार्यों में रुचि रखते एवं आर्य समाज की समस्याओं के प्रति चिन्तित हो जाते थे। इस पर वे सभा मंत्री श्री देवेन्द्र शास्त्री को फोन कर अपने पास बुला लेते, सम्पूर्ण जानकारी लेकर आवश्यक

कार्यवाही हेतु निर्देश करते। यदा कदा स्वयं घर आकर दरवाजा खटखटाते एवं आर्य समाज के विस्तार की चर्चा करते सभा मंत्री रहते उनका मुझे पिता तुल्य मार्गदर्शन मिलता रहा। उनके निधन से मैंने अपना मार्गदर्शक एवं आशीर्वाद दाता खो दिया। आप कर्मठ आर्य, दानी, सहयोगी, साहित्य प्रकाशक वितरक रहें, आप अपने जीवन काल में आर्ष पाठ विधि के प्रोत्साहन हेतु गुरुकुलों को अपना सात्विक दान देते रहे। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती कंचनलता जी का निधन 23 फरवरी 2020 को हो गया, आपके धार्मिक संस्कारों की अमृतमय गोद में आपके चार पुत्र एवं एक पुत्री पले बढ़ें। दिवंगत दम्पत्ति श्री ब्रह्मदेव, उपप्रधान–सवाई माधोपुर, श्री सत्यदेव कोटा, डॉ. सोमदेव जयपुर, श्री इन्द्रदेव जयपुर एवं एक पुत्री श्रीमती प्रतिभा जयपुर का भरा पूरा परिवार छोड़कर गये हैं। माता कंचनलता सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में सरस्वती प्रसाद जी का पूर्ण सहयोग दिया करती थीं। श्रीमान् सरस्वती प्रसाद गोयल जी का जन्म 4 दिसम्बर 1928 मार्गशीर्ष कृष्ण 8 संवत् 1985 को हुआ। आपने बी.ए. साहित्य करने के पश्चात् साहित्य रत्न की उपाधि प्राप्त की। आर्य समाज से सम्बन्धित कई परीक्षाएँ आपने उत्तीर्ण कीं, अखिल भारतीय आर्य कुमार परिषद्, सिद्धान्त रत्न, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित सत्यार्थ शास्त्री परीक्षा जिसमें आपने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। बचपन से ही पारिवारिक पृष्ठभूमि के कारण आर्यसमाज की विचारधारा से आप प्रभावित थे। आप वर्ष 1948 में आर्य समाज कृष्णपोल बाजार जयपुर में आर्य कुमार सभा से जुड़े और इसी आर्य समाज के पुस्तकालयाध्यक्ष, उपमंत्री, मंत्री व प्रधान पद पर वर्षों कार्य किया। आप राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा में उपमंत्री भी रहे। जिला आर्य प्रतिनिधि सभा जयपुर के मंत्री पद के दायित्व का भी आपने निर्वहन किया। दिनांक 31 दिसम्बर 1983 को राजस्थान राज्य सेवा के राजपत्रित पद से सेवानिवृत्त होने के पश्चात् सवाई माधोपुर में निवास करने लगे। आपने 1985 में सवाईमाधोपुर में आर्य समाज भवन का निर्माण कराया तथा मंत्री व प्रधान पद पर रहे। जिला आर्य प्रतिनिधि सभा सवाई माधोपुर के प्रधान पद को भी आपने सुशोभित किया।

आपकी धर्मपत्नी श्रीमती कंचनालता देवी सद्गृहणी व धार्मिक विचारों वाली रहीं। परिवार में समय समय पर वैदिक यज्ञों का आयोजन होता रहता है। प्रतिदिन दैनिक यज्ञ परिवार में होता है। हिण्डौन द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश लम्बे समय तक मँगवाकर निःशुल्क तथा किफायती मूल्य में काफी संख्या में विशेष आयोजनों पर वितरित किए। सार्वदेशिक आर्यवीर दल की राजस्थान शाखा को भी एक लाख रुपये का सहयोग प्रदान कर संरक्षक सदस्य बने। इस प्रकार आप आर्य समाज के विस्तार में तथा सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार में निरंतर प्रयासरत रहें।

–देवेन्द्र शास्त्री

वधु चाहिए

निष्ठावान आर्य (जाट) परिवार के सुसंस्कारित 28 वर्षीय युवक के लिए आर्य परिवार की सुशिक्षित, संस्कारित वधु की आवश्यकता है। युवक का परिचय– जन्म– 30.10.1991 शिक्षा– एम.ए.(भूगोल), बी.एड. नेट(जे. आर.एफ.) एम.फिल. राजस्थान शिक्षा विभाग में प्रथम श्रेणी अध्यापक (विद्यालय व्याख्याता)
लम्बाई– 5.8 विशेष– जाति बन्धन नहीं, आर्य विचारों व संस्कारों को प्राथमिकता।
सम्पर्क सूत्र– 7597894991– 9079039088

आगामी कार्यक्रम

1. दिनांक 2 से 4 मार्च चतुर्वेद शतकम् पारायण महायज्ञ, आर्य समाज, कुचामण, नागौर
2. दिनांक 5 से 8 मार्च यज्ञ एवं वेदकथा, आर्य समाज, पटेल नगर, पवनपुरी, बीकानेर
3. दिनांक 9 मार्च होली मिलन एवं नवसस्येष्टि यज्ञ आर्य समाज जनता कॉलोनी, जयपुर

ऋषि बोध दिवस के अवसर पर हिण्डोन में आर्यवीरों द्वारा शोभायात्रा

आर्य समाज विज्ञान नगर कोटा के वार्षिकोत्सव पर विशिष्ट अतिथि

आर्य समाज हिरणमगरी उदयपुर द्वारा ऋषि बोधोत्सव पर आयोजित रैली

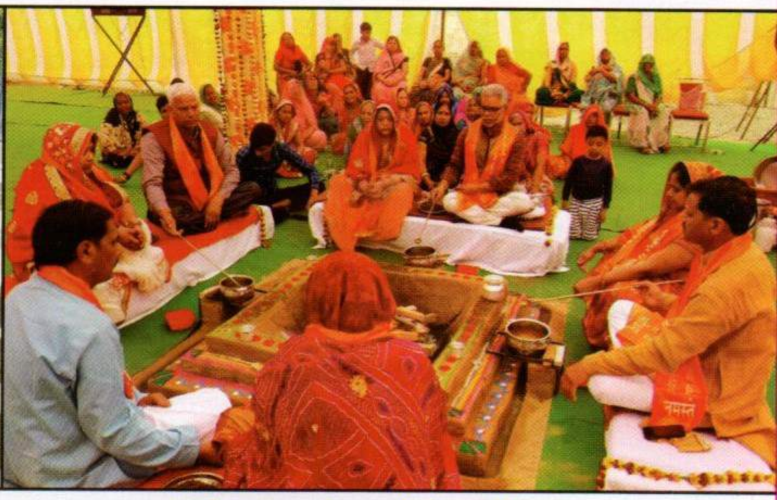

आर्य समाज कोटपूतली में यजुर्वेद पारायण यज्ञ

वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़ में वैदिक आध्यात्मिक न्यास का आठवाँ स्नेह सम्मेलन सम्पन्न

डाक पंजियन सं. RJ / JPC / 214 / 2020-22 आर. एन. आई नं.10471/60

एम डी एच के 100 साल, बेमिसाल !

आपका प्यार, आपका विश्वास, एमडीएच ने रचा इतिहास

1919·CELEBRATING·2019

1919. शताब्दी उत्सव.2019

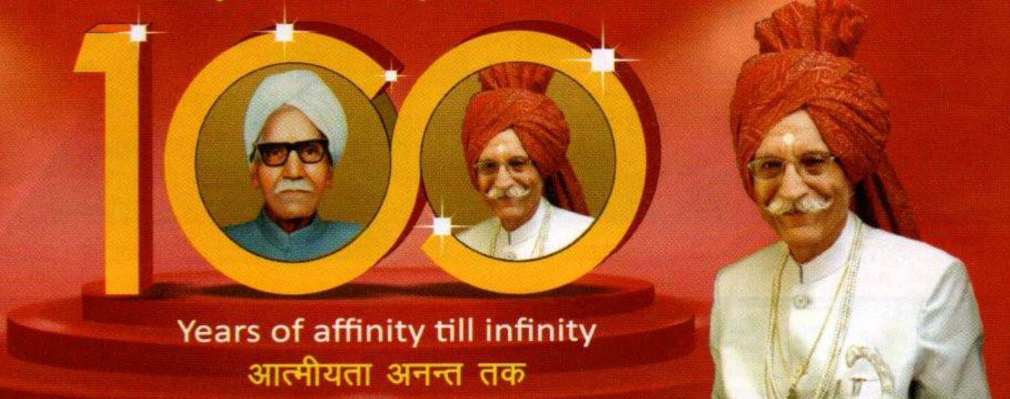

Years of affinity till infinity

आत्मीयता अनन्त तक

MDH मसालों में 100 साल की शुद्धता के जश्न पर सभी ग्राहकों, वितरकों एवं शुभचिन्तकों को हार्दिक बधाई

महाशय धर्मपाल जी
पद्मभूषण से सम्मानित

भारत सरकार ने व्यापार और उद्योग, खाद्य प्रसंस्करण (Trade & Industry, Food Processing) में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए दिनांक 16 मार्च, 2019 को राष्ट्रपति भवन में आयोजित समारोह में महाशय जी को भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी द्वारा पद्म भूषण सम्मान से अलंकृत किया गया।

विश्व प्रसिद्ध एमडीएच मसाले शुद्धता और गुणवत्ता की कसौटी पर खरे उतरे।

भारत सरकार द्वारा "ITID Quality Excellence Award" से सम्मानित किया गया।
यूरोप में मसालों की शुद्धता के लिए "Arch of Europe" प्रदान किया गया।
"Reader Digest Most Trusted Brand Platinum Award" भी प्रदान किया गया।

The Brand Trust Report ने वर्ष 2013 से 2019 तक लगातार 5 वर्षों के लिए ब्रांड एमडीएच को India's Most Trusted Masala Brand & India's Most Attractive Brand का स्थान दिया है।

MDH मसाले

सेहत के रखवाले असली मसाले सच–सच

महाशय धर्मपाल जी ने सियालकोट (पाकिस्तान) से आकर कठिन परिस्थितियों और संघर्ष से अपने जीवन को संवारा है और बड़े पैमाने पर समाज और मानव जाति की सेवा के लिये अपने व्यवसाय को समर्पित किया है। अधिक जानने के लिये YouTube Channel पर Mahashay Dharampal Gulati टाईप करें और देखें।

प्रेषकः–
सम्पादक,
आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
हनुमान ढाबे के पास, राजा पार्क,
जयपुर–302004

प्रेषित

टिकट